चमत्कार के पवित्र शास्त्रिय मकसद: वचनों की पुष्टि

डग्लस जेकबी की किताब "द स्पीरीट" से लिया गया।

खुद पवित्रशास्त्र

■यह जीवन के लिये एक मार्गदर्शक है। मत्ती ४:४
उन्होंने उत्तर दिया, "धर्मशास्त्र में लिखा है कि "मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु परमेश्वर के हर एक वचन से जो उसके मुख से निकलता है, जीवित रहता है।"

■पहली शताब्दी में मसीहियों के पास केवल पुराना नियम के वचन ही थे। २तिमुथियुस ३:१५
"बचपन से पवित्र शास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिये बुध्दिमान बना सकता है।"

बोले गए वचनों की पुष्टि

वचनों को लिखने और उसमें लिखे गए सन्देश को पूरा करने के लिये चमत्कार ज़रूरी थे। ■२पतरस १:१९-२१
[१९] हमारे पास नबियों का जो वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा। तुम यह अच्छा करते हो और यह समझकर ुस पर ध्यान करते हो कि यह एक दीया है, जो अन्धेरे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे, और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे।[२०]पर पहले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी की अपनी ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती।[२१] क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई। पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरणा पाकर परमेश्वर की ओर से बोलते हैं।

■इफिसियों ३:४-५
[४] जिसे तुम पढ़कर जान सकते हो कि मैं मसीह ा वह भेद कहां तक समझता हूँ।[५] वह दूसरे समयों में मनुष्य की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और नबियों पर प्रकट किया गया है।

■इफिसियों २:२०
[२०] तुम प्रेरितों और नबियों की नेव पर जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं है, बनाए गए हो।

■इफिसियों ४:११-१४
[११] उसी ने कुछ को प्रेरित, कुछ को नबी और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाला, कुछ को कलीसिया के मेषपाल और कुछ को उपदेशक नियुक्त किया; [१२] और उन्हें दायित्व सौंपा जिस से पवित्र लोग सिध्द हो जाएं, और वे सेवा का काम करें जिस से मसीह की देह निर्मित होकर उन्नति करे [१३] जव तक कि हम सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, तुा एक सीध्द मनुष्य न बन जाएं और मसहह के पूरे डीलडौल तक न बढ़ जाएं।

[१४] तब हम आगे को बच्चे के समान नहीं रहेंगे जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से, उनकी भ्रमपूर्ण युक्तियों से, उनके उपदेश की हवा के हर एक झोंके से उछाले, और इधर-उधर उड़ाए जाते हैं।

■यिर्मयाह २३

व्यवस्था और नबियों की पुष्टि

■पुराने नियम के नबियों के सन्देशों की पुष्टि परमेश्वर ने चमत्कारों के द्वारा की।
■निर्गमन ४:१-५
[१]तब मूसा ने उत्तर दिया, "वे मेरी प्रतीती न करेंगे और न मेरी सुनेंगे वरन् कहेंगे, कि प्रभु ने तुझ को दर्शन नहीं दिया।" [२]प्रभु ने उस से कहा, "तेरे हात में वह क्या है?" वह बोला, "लाठी।" [३] उस ने कहा, "उसे भूमि पर डाल दे।" जब उस ने उसे भूमि पर डाला तब वह सर्प बन गई और मूसा उसके सामने से भागा। [४] तब प्रभु ने मूसा से कहा, "हाथ बढ़ाकर उसकी पूंछ पकड़ ले कि वे लोग प्रतीति करें कि तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर अर्थात् अब्राहम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर, और याकूब के प्रभु परमेश्वर ने तुछ को दर्शन दिया है।" [५] जब उस ने हाथ बढ़ाकर उसको पकड़ा तब वह उसके हाथ में फिर लाठी बन गई।

- अनेक चमत्कार जो मूसा ने किये वह अपना अधिकार स्थापित करने के लिये किये।
- किसी और नबी के द्वारा परमेश्वर ने बात किये सौ से ज्यादा साल बीत गए थे।
- यह चमत्कार लोगों को परमेश्वर पर विश्वास दिलाने के लिये आवश्यक थे।

■परमेश्वर के नबी पर विश्वास न करने के नतीजे

■गिनती १६:२८-३५

२८तब मूसा ने कहा, इस से तुम जान लोगे कि प्रभु ने मुझे भेजा है कि यह सब काम करूँ, क्योंकि मैं ने अपनी इच्छा से कुछ नहीं किया। २९यदि उन मनुष्यों की मृत्यु और सब मनुष्यों के समान हो, और उनका दण्ड सब मनुष्यों के समान हो, तब जानना कि मैं प्रभु का भेजा हुआ नहीं हूँ। ३०परन्तु यदि प्रभु अपनी अनोखा शक्ति प्रकट करे, और पृथ्वी अपना मुंह पसारकर उनको, और उनका सब कुछ निगल जाए, और वे जीते जी अदोलोक में जा पड़ें, तो तुम समझ लेना कि इन मनुष्यों ने प्रभु का अपमान किया है। ३१मूसा ये सब बातेंकह ही चुका था, कि भूमि उन लोगों के पांव के नीचे फट गई। ३२पृथ्वी ने अपना मुंह खोल दिया और उनका, और उनका घरदार का सामान, और कोरह के सब मनुष्यों और उनकी सारी सम्पत्ति को भी निक्षल लिया।

■कोरह के पुत्रों ने मूसा के अधिकार का विरोध किया और उसके कामों पर प्रश्न उठाया।

■मूसा ने प्रभु की सहायता माँगी और उसके द्वारा इस बात को सुलझाया। हम सभी स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि सही कौन था!

■मूसा से जुड़े हरएक चमत्कार प्राय: स्वयं परमेश्वर ने किये।

■निर्गमन २०:१८-१९

१८सब लोग बादल के गरजने, बिजली के चमकने और नरसिंगे के शब्ध सुनते, और धुआं उठते हुए पर्वत को देखते रहे, और देख के, कांपकर दू खड़े हो गए; १९और वे मूसा से कहने लगे, तू ही हम सब से बातें कर, तब तो हम सुन सकेंगे; परन्तु परमेश्वर हम से बातें न कर, ऐसा न हो कि हम मर जाएं।

■बाहर के लोगों को भी परमेश्वर सच्चे हैं यह जानने के लिये चमत्कारों से मदद मिली। निर्गमन ७:१४

जहाँ तक नबियों की बात है तो, इतिहास में किसी भी समय से बढ़कर चमत्कारों का सम्बन्ध भविष्यकथन के अभीयान के उत्थान से है (अर्थात् इश्वरीय सामर्थ्यवाले नबी):

■एलिय्याह ईश्वरीय सामर्थ्य और चमत्कारों से भरा था - १राजा १८

■१राजा १७:२४

स्त्री ने एलिय्याह से कहा, "अब मुझे निश्चय हो गया है कि तू परमेश्वर का जन है, और प्रभु का जो वचन तेरे मुंह से निकलता है, वह सच होता है।"

सारपत की रहनेवाली विधवा स्त्री ने चमत्कारों के कारण यह जाना कि एलिय्याह के द्वारा परमेश्वर ने चमत्कार किये, एलिय्याह एक नबी है और जो वचन उसने कहा वह सच था।

एक धनवान और लाजर की कहानी में, स्वर्गदूत ने धनवान व्यक्ति से कहा कि उसके परीवार को विश्वास करने के लिये प्रभु का वचन ही काफी था - उनके लिये इससे ज्यादा ज़रूरी और कुछ नहीं था।

■लूका १६:३१

"अब्राहम ने उससे कहा, 'जब वे मूसा और नबियों की नहीं सुनते तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे, तो भी वे उसकी नहीं मानेंगे'।"

सुसमाचार की पुष्टि

■यीशु के चमत्कारों से नीकुदेमुस विश्वस्त हुआ कि यीशु परमेश्वर के द्वारा भेजा हुआ एक शिक्षक है।

■यूहन्ना ३:२

■वह एक रात को यीशु के पास आया। उस ने यीशु से कहा, "हे रब्बी, हम जानते हैं कि आप परमेश्वर की ओर से गुरू होकर आए हैं; क्योंकि कोई भी मनुष्य इन आश्चर्यपूर्ण चिन्हों को जो आप दिखाते हैं, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो कभी नहीं दिखा सकता।"

■यूहन्ना बप्तिस्मादाता जब विश्वास में संघर्ष कर रहे थे तब यीशु ने उसे चमत्कारों के बारे में सोचने का प्रोत्साहन दिया।
■मत्ती ११:४-५
४यीशु ने उत्तर दिया, "जो कुछ तुम सुनते हो और जो देखते हो, वह सब जाकर यूहन्ना को बताओ। ५अन्धे देखते हैं, और लंगड़े चलते-फिरते हैं। कोढ़ी शुध्द किये जाते हैं, और बहिरे सुनते हैं। मुर्दे जिलाए जाते हैं; और गरीबों को सुसमाचार सुनाया जाता है।"

■जब यीशु ने अपने शिष्यों से बात किया तो, उन्हें चमत्कारों के सबूतों पर विश्वास करने को कहा।
■यूहन्ना १४:११
११मेरा ही विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ; और पिता मुझ कें है। नहीं तो मेरे इन कामों ही के कारण मेरा विश्वास करो।

■चमत्कारों की प्राथमिकता लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना या उनके प्रति प्रेम दिखाना नहीं था। यीशु के अधिकार पर कोई शंका न करे यह था।
■यूहन्ना २०:३०-३१
३०यीशु ने और भी बहुत आश्चर्यपूर्ण चिन्ह शिष्यों के सामने दिखाए जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए हैं। ३१परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर के पुत्र, मसीह हैं; और तुम विश्वास करके यीशु के नाम से जीवन पाओ।

■सभी नबी चमत्कारों के कारण ही प्रमाणित थे, यही एक कारण है कि पौलूस अपने किये चमत्कारों पर ज़ोर डालकर इन्हें अपने प्रेरित कार्यों की गवाही के रूप में बताता है।
■रोमियों १५:१८-१९
१८उन बातों को छोड़ मुझे और किसी बात के विषय में कहने का साहस नहीं, जो मसीह ने अन्य जातियों की अधीनता के लिए वचन, कर्म, १९ चिन्हों, अद्‌भुत कामों की सामर्थ से, और पवित्र आत्मा की सामर्थ से मेरे ही द्वारा किए। यहाँ तक कि मैंने यरुशलेम से लेकर चारों ओर इल्लुरिकुम तक मसीह के सुसमाचार का पूरा-पूरा प्रचार किया।
■२कुरून्थियों १२:१२
१२प्रेरित के लक्षण भी तुम्हारे बीच सब प्रकार के धीरज सहित चिन्हों, अद्‌भुत कामों और सामर्थ के कामों से दिखाए गए।

प्रेरित की सम्पुर्ण किताब के सभी चमत्कार ज़्यादातर प्रेरितों द्वारा या जिन लोगों पर उन्होंने अपना हाथ रखा उनके द्वारा किया गया: प्रेरित २:४३, ३:७, ५:१२, ५:१५, १६,९:३४, ९:४९, १३:११, १४:३, १४:१०, १५:१२, १६:१८, १९:६, १९:११-१२, २०:१०, २८:८-९।
■यह इतना महत्वपूर्ण क्यों था? पहली शताब्दी की कलीसिया पूर्ण रूप से प्रेरितों के शिक्षण में लवलीन थी। कल्पना किजिये जब किसी को अपनाकर कोई उसका अनुयायी बनता तो कैसा लगता होगा?
■प्रेरणा रहित व्यक्ति एक ऐसे युग में जब परमेश्वर के प्रेरणादायक वचन अधुरे थे। यह कुछ कलीसियाओं में हुआ:
■२कुरून्थियों ११:३-६
३परन्तु मैं डरता हूँ कि जैसे सांप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिये, कहीं भ्रष्ट न किए जाएं। ४यदि कोई तुम्हारे पास आकर किसी दूसरे यीशु का प्रचार करे जिसका प्रचार हम ने नहीं किया या कोई और आत्मा तुम्हें मिले जो पहले न मिला था या और कोई सुसमाचार जिसे तुम ने पहले न माना था, तो तुम्हारा सहना ठीक होता। ५किन्तु मैं तो समझता हूँ कि मैं मिसी बात में बड़े प्रेरितों से कम नहीं हूँ। ६यदि मैं बोलने में अनाड़ी हूँ, तो भी ज्ञान में नहीं हूँ। हम ने इसको हर बात में सब पर तुम्हारे लिए प्रकट किया है।
■२कुरून्थियों २ष११
११ताकि शैतान का हम पर दाव न चले। हम शैतान की याजनाओं से अनजान नहीं हैं।

पौलुस, विशेष रुप से चमत्कार करने की अपनी योग्यता के आधार पर अपने प्रेरित के अधिकार को दृढ़ बनाता है।
■प्रेरित १४:३
पौलुस और बरनबास बहुत दिनों तक वहाँ रहे, और प्रभु-भरोसे पर साहस से बातें करते रहे। प्रभु उनके हाथों से चिन्ह और अद्‌भुत काम करवाकर अपने अनुग्रह के वचन पर गवाही देता था।

क्या कारण था कि परमेश्वर ने प्रेरितों को चमत्कार करने की योग्यता दी?
■पौलुस और बरनबास को प्रोत्साहन देने के लिये? लोगों पर प्रभाव डालने के लिये? क्या इसलिये नहीं था कि वो जिस सन्देश का प्रचार कर रहे थे उसे लोग परमेश्वर के वचन के रूप में ग्रहण करें?

■वे क्या प्रचार कर रहे थे? क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि वो ऐसा कह रहे थे, "मेरे साथ लूका अध्याय ९ और वचन २३ देखो?"
वे किसी भी पवित्र शास्त्र से प्रचार नहीं कर रहे थे। हमारा सौभाग्य है कि हमारे पास यह पूरा किया हुआ सम्पूर्ण वचन हैं जो खोए हुओं को और एक दूसरे को सिखाने के लिये काफी है, इसके परे हमें और किसी भी चीज़ की आवश्यक्ता नहीं है २तीमुथियुस ३:१६-१७, और न ही चमत्कारों के पुष्टि की आवश्यक्ता है।

हमारे अध्ययन के लिये यह भी लाभदायक है

■मरकुस १६:१९-२०
[१९]प्रभु यीशु उन से बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिये गए, और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गए। [२०]चेले निकले और उन्होंने हर जक्षह प्रचार किया। प्रभु उनके साथ काम करते रहे। वह उन चिन्हों के द्वारा जो साथ-साथ होते थे, वचन को दृढ़ करते रहे। आमिन।

■इब्रानियों २:२-४
[२]जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था, जब वह स्थिर रहा और हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक-ठीक बदल मिला [३]तो हम लो ऐसे बड़े उध्दार से निश्चिन्त रहकर कैसे बच सकते हैं जिसकी चार्चा पहले-पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुननेवालों के द्वारा हमें निश्चय हुआ? [४]साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, अद्‌भुत कामों, नाना प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा।

यह अन्तिम वचन कहता है, उध्दार के सन्देश की घोषणा यीशु के द्वारा की गई, और फिर प्रेरितों ने इसकी पुष्टि की। वह पुष्टि पहले ही हो चुकी है। और यद्यपी भूतकाल निर्णायक नहीं है, आशय यह है कि चमत्कारों का युग गुज़र चुका है।

प्रकट किये हुए बातों की पुष्टि

■हालांकि सारे पुनाने नियम में कभी-कभार चमत्कार होते रहे हैं, अधिकतर चमत्कार दो घटनाओं के साथ जुड़े हैं: निर्गमन और भविष्यकथन के अभियान के उत्थान से (जिसकी शुरूआत एलिय्याह और एलीशा से होती है)।

■हम यह समझ पाते हैं कि यह इन दो समयों पर परमेश्वर अपने लोगों पर बातों को प्रकट कर रहे थे: व्यवस्था और नबी।

■इसीलिये चमत्कारों के दूसरे विसफोट की अपेक्षा केवल नए नियम के समय सुसमाचारों के प्रकट होने के समय ही की जा सकती थी।

■पुराने नियम के अनेक अनुछेद इस बात की पुष्टि करते हैं।

■परमेश्वर के भविष्यात्मक आत्मा के वापस लेने को न्याय के चिन्ह के रूप में देखा जाता है।

■यशायाह २९:१०
[१०]प्रभु ने तुमको भारी नीन्द में डाल दिया है और उस ने तुम्हारी नबीरूपी आंखों को बन्द कर दिया है और तुम्हारे दर्शीरूपी सिरों पर पर्दा डाला है।

■मीका ३:६
[६]इस कारण तुम पर ऐसी रात आऐगी, कि तुमको दर्शन न मिलेगा, और तुम ऐसे अन्धकार में पड़ोगे कि भावी न कह सकोगे। भविष्यद्वक्ताओं के लिये सूर्द अस्त होगा, और दिन रहते उन पर अन्धियारा छा जाएगा।

■भजन संहिता ७४:९- निर्वासित काल में लिखा गया, निर्वासित काल के अलावा पुराने नियम के अनेक ऐतिहासिक काल के लिये इस्तेमाल किया जा सकता है।

■भजन संहिता ७४:९
[९]हमको हमारे निशान नहीं देख पड़ते; अब कोई नबी नहीं रहा, न हमारे बीच कोई जानता है कि कब तक यह दशा रहेगी।

ध्यान दीजिये कि नबी (परमेश्वर के द्वारा उनपर प्रकट की गई बातों के साथ) और चमत्कारी चिन्हों (उन प्रकट की गई बातों की पुष्टि के लिये) का उल्लेख एक साथ किया गया है।

आखिरकार पुराने और नए नियमों के परस्पर सम्बन्ध के काल में (ई.पू. ४३५ से यीशु के बाद ३० वर्ष) भविष्यवाणीयाँ बन्द हो गईं।

फारसी काल में लिखे गए पुराने नियम के अन्तिम किताबों (एस्तर, एज्रा, नहेम्याह, १ और २ इतिहास) से लेकर पुराने नियम के अन्तिम भविष्यद्वक्ता यूहन्ना बप्तिस्मादाता के समय तक लगभग ५०० वर्षों का चकित करने वाला एक लम्बा अन्तराल रहा!

भविष्यवाणियों की चुपी के इस काल को यहूदी मत के लेखन और साथ ही साथ सन्देहयुक्त किताबों में भी लिखा है। देखिये १मकाबी ९:२७, "जब से भविष्यद्वक्ताओं का लोगों के बीच आना बन्द हुआ तब से पहले ईस्राएल पर ऐसी विपत्ति कभी नहीं पड़ी।"

भविष्यवाणियों के बारे में कुछ लोग ही जानते थे।
आधुनिक पिन्तेकुस्त वर्ग में, भविष्यवाणियों का रूकना, अन्य भाषा में बात करना और चमत्कारी रूप से चंगाई, यह बातें होना सोच के बाहर हैं।

भविष्यात्मक बातों की लहर को परमेश्वर ने कई बार रोका और आगे भी रोकने की सम्भावना पर विश्वास करने के कई कारण हैं।

■१कुरुन्थियों १३:८-१२

[८]प्रेम कभी टलता नहीं। भविष्यवाणियां हों, तो वे समाप्त हो जाएंगी। भाषाएं हों, तो वे जाती रहेंगी। ज्ञान हो, तो वह मिट जाएगा। [९]क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यवाणी अधूरी है। [१०]परन्तु जब सर्वसिध्द आएगा तब अधूरा मिट जाएगा। [११]जब मैं बच्चा था तब के समान बोलता था। मेया बच्चे का सा मन था, बच्चे की सी समझ थी। परन्तु जब मैं बड़ा हो गया तब मैंने बच्चों की बातें छोड़ दीं। [१२]इस समय हमें दर्पण में धुंधला-सा दिखाई देता है। परन्तु उस समय मैं पूरी रीति से पहिचानूंगा, जैसा मैं पहिचाना गया हूँ।

इनका सार है: पवित्र शास्त्रीय चमत्कार:

■दुर्लभ थे
■भविष्य की घटनाओं से जुड़ी थीं जिनका प्राथमिक उद्देश्य था परमेश्वर के वचनों मी पुष्टि।

निष्कर्ष:

■चमत्कारों का प्राथमिक कार्य था वचनों की पुष्टि।
यूहन्ना २०:३०-३१ यह दिखाता है कि एक बार जब चमत्कारों को लिखा गया, तो मसीह पर विश्वास करने के लिये सिर्फ उनका पढ़ना हमारे लिये काफी होना चाहिये।
बहूतों को यह बात समझ में नहीं आती, उन्हें लगता है कि लोगों को परमेश्वर की ओर मुढ़ने के लिये चमत्कार होना ज़रूरी है।
परन्तु लूका १६ के धनवान व्यक्ति के समान कई विश्वासी इस प्रकार सोचते हैं।
यूहन्ना २० के अनुसार यदि यीशु फिर से आकर चमत्कार करें तो भी वो विश्वास नहीं करेंगे।

■सीओल के असाधारण योग्यता प्राप्त सर्वोत्तम अगुवे और संसार में सबसे विख्यात राय देने वाले, पोल छो कहते हैं, "चमत्कार देखे बिना लोग इस बात से सन्तुष्ट नहीं हो सकते कि परमेश्वर शक्तिशाली हैं।" अब्राहम के शब्द इन से कितने अलग हैं, जिसमें एक सामान्य ज्ञान और बुध्दिमानी है, अधिकांश 'उपदेश के मंचों' में जिसकी कमी है। (लूका १६:३१)

■चमत्कारों का मकसद था परमेश्वर के वचनों को लोगों तक लाना। अब जबकि हमारे पास पवित्र शास्त्र है तो, चमत्कारों का मकसद पूरा हो गया है- हमारे पास परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन है।
इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर के हाथ अब थक चुके हैं, या फिर वह मदद और चंगाई की हमारी प्रार्थना का उत्तर नहीं देता, सिर्फ यह बात है कि जिस तरह से पहली शताब्दी में चमत्कारों की आवश्यक्ता थी आज उसकी ज़रूरत नहीं है।